महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252551 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

---

'मिथक सरित सागर' पुस्तक में

मिथक की पश्चिम की थ्योरी को ध्वस्त कर दिया- प्रो. रमेश कुंतलमेघ

हिंदी विवि के साहित्य विद्यापीठ में चर्चा का आयोजन

5 अक्तूबर 2011: माइथोलाजी को आधार बनाकर भाषा व मिथक के जन्म की खोज करने वाले जानेमाने सौंदर्यशास्त्री, मानवविज्ञानी तथा साहित्य चिंतक प्रो. रमेश कुंतलमेघ का मानना है कि उनकी आनेवाली किताब 'मिथक सरित सागर' में मिथक के बारे में प्रस्थापित पश्चिम की थ्योरी को मिथक को लेकर किये गये गहरे अनुसंधान के माध्यम से ध्वस्त कर दिया है। उन्होंने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ में आयोजित चर्चा के दौरान कहा कि हम जिस पुरानी सभ्यता की बात करते है वह दो लाख साल पहले की है और सबसे पूरानी सभ्यता इजिप्त की है। यह सभ्यता इसा पूर्व आठ हजार साल पहले की है। मानव जन्म, मिथक युग और मानव सभ्यता आदि पर भाष्य करते हुए उन्होंने कहा कि इस विषय को लेकर मैक्स मुलर, फ्रेजर व कॅम्पबेल इन पश्चिमी लेखकों ने सबसे पहले मिथक और सभ्यता की खोज की। उन्हीं की खोज का आधार लेकर 'मिथक सरित सागर' नाम से लगभग 1500 पृष्ठ की किताब लिखी गयी है जो अगले साल फरवरी में प्रकाशित होगी। इस पुस्तक में विश्वमिथक के बारे में डेढ लाख वर्ष के पूरे युग पर शोध किया गया है। ज्ञात हो कि प्रो. रमेश कुंतलमेघ की सौंदर्यशास्त्र पर अथातो सौंदर्य जिज्ञासा, साक्षी है सौंदर्य प्राश्निक, कामायनी मिथक और स्वप्न आदि महत्वपूर्ण पुस्तकों सहित लगभग 50 पुस्तकें प्रकाशित हैं। 82 वर्षीय प्रो. कुंतलमेघ ने भारत ही नहीं अपितु विश्व के जाने-माने विश्वविद्यालयों में मिथक और

सभ्यता पर व्याख्यान दिए हैं। हिंदी साहित्य के विख्यात साहित्यिक इतिहासकार एवं आलोचक हजारीप्रसाद द्विवेदी के शिष्य रहे प्रो. कुंतलमेघ का कहना है कि मिथक हमेशा ही वर्तमान रहता है और इसे 'मिथक सरित सागर' पुस्तक में मार्क्सवादी दृष्टीकोण से निर्वचन प्रस्तुत किया गया है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि मिथकों के काफी साल बाद नैतिकता आती है। नैतिकता सभ्यताओं के साथ विश्वमानव में संचारित होती है। मिथकों के विस्थापन पर पुछे गये सवाल पर उन्होंने कहा कि मिथकों का विस्थापन धर्म और अंध:विश्वास से होता है। उन्होंने माना कि 'मिथक सरित सागर' लिखते समय जब धर्म के प्रश्न सामने आया तब धर्म के पहलुओं पर निर्वचन से दूर रहा। साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल के कक्ष में चर्चा के दौरान कक्ष में चित्रकार एवं शोध छात्र ज्योतिष पायेंग की पेंटिंग को देखकर चित्रों में प्रयोग किये गये रेखा, बिंब एवं रंगों के प्रस्तुतिकरण की प्रशंसा करते हुए उनकी प्रतिभाओं को व्यापक रूप से बाहर लाने के लिए प्रोत्साहित किया। ललित कला अकादमी, दिल्ली तथा चंडीगढ एवं भारत की अन्य कलादीर्घाओं में प्रदर्शनी आयोजित करने हेतु मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल, रीडर डॉ. प्रीति सागर, सहायक प्रोफेसर सर्वश्री डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. वीर पाल यादव, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, अमरेंद्र कुमार शर्मा तथा उमाकांत दुबे आदि उपस्थित थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी